Resource: अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

Aquifer Open Study Notes (Book Intros)

This work is an adaptation of Tyndale Open Study Notes © 2023 Tyndale House Publishers, licensed under the CC BY-SA 4.0 license. The adaptation, Aquifer Open Study Notes, was created by Mission Mutual and is also licensed under CC BY-SA 4.0.

This resource has been adapted into multiple languages, including English, Tok Pisin, Arabic (عربي), French (Français), Hindi (हिंदी), Indonesian (Bahasa Indonesia), Portuguese (Português), Russian (Русский), Spanish (Español), Swahili (Kiswahili), and Simplified Chinese (简体中文).

अध्ययन नोट्स - पुस्तक परिचय (टिंडेल)

HOS

होशे

होशे

होशे ने अपनी पत्नी के व्यभिचार के कारण विश्वासघात और पीड़ा का अनुभव किया। होशे के अनुभव परमेश्वर के अपने लोगों के पापों के कारण होने वाले कष्ट को दर्शाते हैं। परमेश्वर का न्याय दण्ड की माँग करता है, परन्तु अपने प्रेम में, परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों को छुड़ाने का वादा करते हैं। होशे की पुस्तक हमें परमेश्वर के हृदय को समझने के लिए एक माध्यम प्रदान करती है।

पृष्ठभूमि

प्राचीन इस्राएल के इतिहास में कुछ युग मध्य-ई.पू.700 से अधिक अशान्त थे। होशे ने अपनी सेवकाई उत्तरी राज्य में यारोबाम द्वितीय (793–753 ई.पू.) के लम्बे और स्थिर शासन के अन्तिम वर्षों में शुरू की। यद्यपि वह एक दुष्ट राजा था (2 रा 14:23–24), यारोबाम एक मजबूत और सक्षम अगुआ था उसने इस्राएल की सीमाओं का विस्तार किया, जैसा कि दाऊद और सुलैमान के तेजस्वी दिनों के बाद से नहीं देखा गया था (2 रा14:25–28)। यारोबाम की सफलताओं ने कुछ इस्राएलियों को बड़ी समृद्धि दी, परन्तु कई अन्य को दरिद्र और निराश्रित छोड़ दिया।

होशे की सेवकाई के प्रारम्भ में यारोबाम द्वितीय की मृत्यु हो गयी। इसके बाद के तीन दशकों में, छः अलग-अलग राजा इस्राएल के सिंहासन पर बैठे। केवल एक की स्वाभाविक मृत्यु हुई; चार की हत्या कर दी गई। इस राजनीतिक उथल-पुथल के बीच, शत्रु राष्ट्र इस्राएल खिलाफ योजनाओं को बना रहे थे।

उत्तरी राज्य इस्राएल ने अपनी स्थापना से ही विदेशी देवताओं की उपासना की थी, परन्तु अब वह और भी अधिक दृढ़ता से इन मूर्तिपूजक देवताओं की ओर मुड़ गए थे। इस्राएलियों ने विनाश से बचने के लिए हर सम्भव उपाय अपनाने की कोशिश की, परन्तु उन्होंने यहोवा की ओर लौटने से इनकार कर दिया।अन्ततः, 722 ई.पू. में, शक्तिशाली और निर्दयी अश्शूर साम्राज्य ने उत्तरी राज्य इस्राएल को नष्ट कर दिया।

होशे ने इस संकटग्रस्त राष्ट्र के अन्तिम दिनों में परमेश्वर के आने वाले न्याय की घोषणा की। परन्तु इसके साथ ही, उन्होंने आशा का सन्देश भी दिया और इस्राएलियों से विनती की कि वे यहोवा की ओर लौटें, क्योंकि वे ही एकमात्र हैं जो उन्हें पुनर्स्थापित कर सकते हैं।

सारांश

अध्याय 1–3 में भविष्यद्वक्ता होशे की उसकी विश्वासघाती पत्नी के साथ दुखद विवाह का वर्णन किया गया है। इस खण्ड का उद्देश्य केवल होशे की जीवनी प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर और उनके चुने हुए लोग, इस्राएल के बीच के पीड़ादायक सम्बन्ध को उजागर करता है। जिस प्रकार होशे की पत्नी गोमेर ने विश्वासघात किया, उसी प्रकार इस्राएल ने भी कनानी देवताओं की उपासना करके एक वेश्या की तरह व्यवहार किया। होशे ने परमेश्वर के न्याय की घोषणा की, परन्तु उन्होंने परमेश्वर की इस लालसा की भी घोषणा की कि वह अपनी भटकी हुई दुल्हन को फिर से अपनाना चाहते हैं और उसके साथ अपने सम्बन्ध को पुनःस्थापित करना चाहते हैं।

अध्याय 4–14 में होशे की विभिन्न भविष्यवाणियों का संग्रह है, जो उनकी सेवकाई के आरम्भ से लेकर 722 ई.पू. में इस्राएल के विनाश से ठीक पहले तक की घटनाओं को लगभग कालानुक्रमिक क्रम में प्रस्तुत करता है। इन अध्यायों में, भविष्यद्वक्ता इस्राएल के लोगों और विशेष रूप से उनके आगुओं के खिलाफ परमेश्वर के आरोप प्रस्तुत करते हैं। उनके पापों के परिणाम गम्भीर होंगे—देश नष्ट हो जाएगा। हालांकि, परमेश्वर अपने चुने हुए लोगों को नहीं छोड़ेंगे। पुस्तक भविष्य की पुनःस्थापन के ईश्वरीय वादे के साथ समाप्त होती है।

लेखक और तिथि

हम इस पुस्तक के अलावा भविष्यद्वक्ता होशे के बारे में कुछ नहीं जानते। हम उनके पिता का नाम (1:1) जानते हैं और यह भी कि उनका विवाह गोमेर नाम की स्त्री से हुआ था, और उससे उनके बच्चे थे।

होशे ने लगभग ई.पू. 760 से लेकर ई.पू. 722 में इस्राएल के पतन से ठीक पहले तक उत्तरी राज्य इस्राएल में भविष्यद्वाणी की (देखें 1:1)। सम्भवतः होशे ने अपनी मौखिक भविष्यवाणियों को स्मरण रखा होगा, और बाद में उन्होंने स्वयं या उनके शिष्यों ने इन भविष्यवाणियों को लिखकर एक

संकलन के रूप में एकत्रित किया। यह कार्य सम्भवतः ई.पू. 722 में इस्राएल के पतन के बाद किसी समय दक्षिणी राज्य यहूदा में किया गया होगा।

साहित्यिक विशेषताएँ

होशे इस्राएल के साहित्य, इतिहास और विश्वास में अच्छी तरह से शिक्षित थे। उनकी भविष्यवाणियाँ साहित्यिक और अलंकारिक तकनीकों पर निर्भर करती थीं—जैसे कि रूपक भाषा, नीतिवचन और लोक कहावतें—जिनसे इस्राएलियों के लिए परमेश्वर का सन्देश अधिक जीवंत और प्रभावशाली बन गया।

अर्थ और संदेश

परमेश्वर की इस्राएल के साथ की गई वाचा होशे की भविष्यवाणी का मुख्य केन्द्र है। जब परमेश्वर ने सीनै पर्वत पर इस्राएल के साथ वाचा बाँधी, तब उन्होंने इस्राएलियों को सृष्टिकर्ता और भूमण्डल के पालनकर्ता के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध में रहने का अद्‌भुत अवसर प्रदान किया। इस वाचा में इस्राएलियों के लिए आत्मिक और भौतिक आशीषों का वादा किया गया था, परन्तु इसके साथ यह भी अपेक्षा थी कि वे परमेश्वर के सामने धर्मी जीवन व्यतीत करें। यहोवा ने इस्राएलियों के साथ अपनी वाचा को विश्वासयोग्य तरीके से निभाया और इस्राएलियों को उसकी आशीषें प्राप्त हुईं , परन्तु उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया और उसकी योजना तथा उद्देश्य की अवहेलना की।

विवाह प्रभु और उनके लोगों के बीच वाचा सम्बन्ध का एक शक्तिशाली और यादगार प्रतीक है। एक प्रेमपूर्ण पति के रूप में, यहोवा ने इस्राएल को भूमि, भोजन, जल, वस्त्र, और सुरक्षा प्रदान की। फिर भी एक व्यभिचारी जीवनसाथी की तरह, इस्राएल ने कनानी देवताओं की उपासना के माध्यम से सन्तोष की खोज की। ये देवता इस्राएल के प्रेमी बन गए, और इस्राएल ने परमेश्वर की सभी आशीषों का श्रेय उन्हें दिया। भविष्यद्वक्ता होशे का व्यक्तिगत जीवन उनकी पत्नी, गोमेर के साथ, एक पत्नी की अविश्वस्तता और एक पति की अपनी भटकी हुई दुल्हन के प्रति पीड़ा का यही नाटक लघु रूप में प्रस्तुत करता है।

इस्राएल ने यहोवा के साथ अपनी वाचा को ठुकरा दिया। इसके प्रत्युत्तर में, होशे ने परमेश्वर के न्याय की घोषणा की। फिर भी, जैसे वाचा ईश्वरीय न्याय की नींव थी, वैसे ही यह परमेश्वर की करुणा का आधार भी थी। परमेश्वर ने इस्राएल का न्याय केवल उसे दण्डित करने के लिए नहीं किया; उनकी इच्छा उसे छुड़ाने की थी। ईश्वरीय न्याय का उद्देश्य इस्राएल को उसके सच्चे पति की ओर वापस लाना था, ताकि अपनी करुणा में, वे उसे पुनर्स्थापित कर सकें और उसके साथ अपनी वाचा को फिर से स्थापित कर सकें।

होशे यह दिखाते हैं कि परमेश्वर की करुणा इस्राएल तक न्याय के *माध्यम* से पहुँचती है, न कि न्याय के *स्थान* पर। परमेश्वर ने हमारे लिए भी यही किया है: मसीह के क्रूस पर किए गए न्याय के द्वारा, परमेश्वर सभी के लिए अपनी दया का निमंत्रण प्रदान करते हैं।